IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'सुखो बुद्धानमुप्पादो'

डॉ. सोनल सिंह

सहायक निदेशक

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

शोधसार- *प्रस्तुत पत्र में इस बात पर विचार किया है कि बुद्ध का लोक में उत्पन्न होना सुखकारी है। उन भगवान बुद्ध का स्वरूप ऐसा है।- "इति पि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो, सुगतो, लोकविदू, अनुत्तरो, पुरिसदम्मसारथि, सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा" अर्थात् " भगवान ऐसे हैं, इसलिये उन्हें अर्हत् सम्यक्सम्बुद्ध, विद्या और चरण से सम्पन्न, सुगत, लोकविदू विनेय पुरुषों के अनुपम सारथी, देवताओं और मनुष्यों के शास्ता, बुद्ध भगवान हैं। पत्र में बुद्ध शब्द की व्युत्पत्ति तथा बुद्ध नाम कैसे प्राप्त हुआ है, इस बात पर भी विस्तार डाला गया है। तथा बुद्धों की संख्या कि विसंगति तथा उनके नाम पर चर्चा की गयी है। इस प्रकार इस पत्र के माध्यम से यह भी बोध कराने का प्रयास है कि व्यक्ति के नाम की उपलब्धि उसके कर्मों के द्वारा होती है। भगवान बुद्ध को माता पिता से यह नाम प्राप्त नहीं हैं वरन् उनके गुणों की उपलब्धि के कारण उन्हें यह विशेष नाम प्राप्त है। अतः प्रस्तुत पत्र में भगवान बुद्ध के नाम से जुड़े अन्य पर्यायों पर अपने विचार प्रस्तुत करूंगी।*

कूटशब्द- अर्हत्,सम्मासम्बुद्ध, विज्जाचरणसम्पन्नो, सुगतो

व्युत्पत्ति- बुद्ध शब्द की व्युत्पत्ति बुद्ध (भू0 क0 कृ0) धातु में क्त प्रत्यय (बुद्ध+क्त) लगने से बुद्ध शब्द की व्युत्पत्ति हुयी है। अभिधर्मकोश में वर्णित है। बुद्ध इति कर्तरि क्तविधानम्। बुद्धेर्विकसनाद् बुद्धः, विबुद्ध इत्यर्थः।[1] बुद्ध शब्द का दूसरा अर्थ है- **'बोधति ते बुध्यते'** अर्थात जानना, समझना, संबोध होना[2] या ज्ञात, समझा हुआ, प्रत्यक्ष किया हुआ, जागा हुआ, जागरूक, देखा हुआ।[3] इस प्रकार बुद्ध शब्द का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान सम्पन्न (प्रबुद्ध) और जाग्रत (Enlightened and Awakened)

बुद्ध नाम- गौतम बुद्ध को बुद्ध नाम कैसे मिला, इसकी चर्चा हीनयान व महायान साहित्य में प्रचुर मात्रा में मिलती हैं, जिसका विवरण निम्न प्रकार से है। यथा-सुत्तपिटक के द्वितीय ग्रन्थ मज्झिमनिकाय के सेल सुत्त के अनुसार[4] 'बुद्ध' यह नाम श्रमण गौतम का एक गुणवाचक नाम है, व्यक्तिवाचक नाम नहीं। उसमें भगवान बुद्ध अपनी विशेषताओं के कारण ही स्वयं को बुद्ध कहते हैं कि

---

[1] अभिधर्मकोशम् प्रथम कोश , स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्ध भारती वाराणसी,2008 पृ 4

[2] आप्टे, वामन शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोश, मोतिलाल बनारसीदास पब्लिशर्स दिल्ली, पृ. 718

[3] आप्टे, वामन शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोश, 718

[4] मज्झिमनिकाय ग्रन्थ सुत्तपिटक का द्वितीय भाग है। इनमें मध्यम आकार के सुत्तों का संग्रह है। पपञ्चसुदनी में इसे मज्झिम संगिति भी कहा गया है। मज्झिमनिकाय भाग-2 सेलसुत, बौद्ध भारती वाराणसी 2007, पृ 918 पालि साहित्य का इतिहास,हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 2006 पृ 195

'मैं धर्म राजा हूँ, धर्म चक्र चला रहा हूँ, इस धर्मचक्र को तथागत का अनुजात (पीछे उत्पन्न) सारिपुत्र अनुचालित कर रहा है भावनीय की भावना कर ली, परित्याज्य को छोड़ दिया। अतः हे ब्राह्मण मैं 'बुद्ध' हूँ।

राजाहमस्मि सेला ति, धम्मराजा अनुत्तरो।
धम्मेन चक्कं वत्तेमि चक्कं अप्पटिवत्तियं।।
सम्बुद्धो पटिजानासि, धम्म राजा अनुत्तरो।
धम्मेन चक्कं वत्तेमि, इति भाससि गोतम।।
को नु सेनापति भोतो, सावको सत्थुरन्वयो।
को ते तमनुवत्तेति धम्मचक्कं पवत्तितं।।
मया पवात्तितं चक्कं, (सेला ति भगवा) धम्मचक्कं अनुत्तरं।
सारिपुत्तो अनुवत्तेति, अनुजातो तथागतं।
अभिञ्ञेय्यं अभिञ्ञातं भावतेब्बं च भावितं।

पुनः मज्झिमनिकाय में मिलता है कि बुद्ध का नाम सुनना भी लोक में दुर्लभ है[5] येसं वे दुल्लभो लोको पातुभावो अभिण्हसो। सम्यक्सम्बुद्ध, गौतम बुद्ध को कहते हैं, बुद्ध यह पदवी उन्होंने अपने पुरुषार्थ से प्राप्त किया था। सम्यक ज्ञान प्राप्त करने के कारण उन्हें सम्यक सम्बुद्ध कहा गया।[6] ,

सम्मा सामं च सब्बधम्मानं बुद्धत्ता पन सम्मासम्बुद्धो

आगे खुद्दकनिकाय[7] के अन्तर्गत चूल्लनिद्देस में एक सूत्र उपलब्ध होता है कि 'बुद्ध' - यह नाम माता-पिता, भाई-बहन, मित्र, संबंधी, श्रमण, ब्राह्मण और देवताओं द्वारा दिया हुआ नहीं है, वरन् बोधिमूल में विमोक्ष-पुरस्सर, सर्वज्ञता के अधिगम के साथ उपलब्ध एक प्रज्ञप्ति है। 'बुद्धो ति नेतं मातरा कतं, न पितरा कतं, न भातरा कतं, न भगिनिया कतं, न मित्तामच्चेहि कतं न ञातिसालोहितेहि कतं न समणब्राह्मणेहि कतं न देवताहि कतं। विमोक्खन्तिकमेतं बुद्धानं भगवन्तानं बोधिया मूले सह सब्बञ्ञुतञाणस्य पटिलाभा सच्छिका पञ्ञत्ति यदिदं बुद्धो ति ।'[8]

आगे इसी खुद्दकनिकाय नामक ग्रन्थ के अनुसार प्राप्त है- कि वस्तुतः वह पुरुष जिसने चार आर्यसत्यों को जान लिया है, सर्वज्ञता प्राप्त कर ली है, राग-द्वेष, मोह आस्रव तथा अन्यान्य क्लेशों से पूर्णतः विमुक्त हो परम सम्बोधि को प्राप्त कर लिया है, जो सब पदार्थों को यथार्थ रूप से जानने के बाद प्रजा को उपदेश देता है, ऐसा अबुद्धि विहत तथा बुद्धि प्रतिभाशाली पुरुष ही बुद्ध कहलाता है।[9] 'बुद्धो ति केनट्ठेन बुद्धो? बुज्झिता सच्चानी ति बुद्धो, बोधतो पजाया ति बुद्धो सब्बञ्ञुताय बुद्धो, सब्बदस्साविताय बुद्धो, अभिञ्ञेय्यताय बुद्धो, विकसिताय बुद्धो खीणासवसङ्खातेन बुद्धो, निरूपक्किलेससङ्खातेन बुद्धो, एकान्तवीतरागो ति बुद्धो, एकन्तवीतदोसो ति बुद्धो, एकन्तवीतमोहो ति बुद्धो, एकान्तनिक्किलेसो ति बुद्धो, एकयानमग्गं गतो ति बुद्धो, एको अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो ति बुद्धो, अबुद्धिविहतत्ता, बुद्धिपटिलाभा ति बुद्धो'।

बुद्ध के बारे मे कहा गया है कि बुद्ध का आविर्भाव बोधि या ज्ञान से होता है माता के गर्भ से नहीं। इसलिए बुद्ध का आविर्भाव लोक में दुर्लभ है। किच्छो बुद्धानमुप्पादो[10]

---

[5] मज्झिमनिकाय भाग-2 सेलसुत, बौद्ध भारती वाराणसी 2007, पृ 918

[6] विशुद्धिमग्ग छअनुस्सतिनिद्देसो, बौद्ध भारती वाराणसी 2009, पृ 10

[7] सुत्तपिटक के अन्तर्गत दीघनिकाय का पाचवां भाग खुद्दकनिकाय है इसमें 15 ग्रन्थ है इसमें निद्देस 11 वें स्थान पर है, निद्देस के दो भाग है। महानिद्देस व चुल्लनिद्देस। पालि साहित्य का इतिहास पृ 370

[8] चूल्लनिद्देसपालि पारायनत्थुतिगाथानिद्देसो पृ. 209, मज्झिमनिकाय पृ 398-99

[9] चूल्लनिद्देसपालि पारायनत्थुतिगाथानिद्देसो नालन्दा संस्करण 1959 पृ. 208

[10] किच्छो मनुस्सुपटिलाभो किच्छं मच्चानं जीवितं।
किच्छं सद्धम्मसवणं किच्छो बुद्धानं उप्पादो।। धम्मपद, 14/182, खुद्दकनिकाय भाग-1 पुनः
तुलनात्मक देखें दीघनिकाय महापरिनिब्बाणसुत्त-2/3- **बुद्धो हवे कप्पतेहि दुल्लभो।)**

पुनः धम्मपद[11] में इसी बात पर जोर देते हुए कहा गया है- 'सुखो बुद्धानमुप्पादो'[12] अर्थात बुद्धो का उत्पन्न होना सुखकारी है विशुद्धिमग्ग[13] नामक ग्रन्थ में मिलता है कि बुद्ध ने जीवन एवं जगत के प्रत्येक पहलू का साक्षात्कार कर मानव कल्याण के लिए उपदेश दिया था। बुद्ध ने सत्य का दर्शन एवं अनुभव किया था, इसलिए उन्हें 'तथागत' भी कहा जाता है। उन्होंने चार आर्य सत्यों को स्वयं जानकर दूसरों को उनका बोध कराया इसलिए वह 'बुद्ध' कहलाए।

इमेसं सी भिक्खेव चतुन्नं अरियसच्चानं यथाभूते।
अभिसम्बुद्धता तथागता अरहं सम्मासम्बुद्धो ति वुच्चतीति। [14]

महायान साहित्य के अन्तर्गत महायानसुत्रालंकार[15] में बुद्ध के नाम की विवेचना मिलती है। वह इस तरह से है।

निष्पन्नपरमार्थोऽसि सर्वभूमिविनिः सृतः।
सर्वसत्तवाग्रतां प्रातः सर्वसत्तवविमोचकः।।
अक्षयैरसमैर्युक्तो गुणेर्लोकेषु दृश्यसे।
मण्डलेष्वप्यदृश्यश्च सर्वथा देवमानुषै।।[16]

अर्थात बुद्ध कौन है

1 जिसने परमार्थ तथता का साक्षात्कार कर उसे पा लिया ।

2 सब भूमियों को पार कर चुका हो ।

3 सभी प्राणियों में जो श्रेष्ठ है

4 जिसका काम सब प्राणियों को मुक्त करना हैं।

5 जो असाधारण और अक्षय गुणों से युक्त होता है।

6 दर्शन होते हुए भी अपने धर्मकाय में जो अदृश्य रहता है वह बुद्ध हैं।

बुद्ध के अन्य नाम- गौतम बुद्ध को बौद्धधर्म में अनेक नामों से जाना जाता है उनका विवरण इस प्रकार है- यथा- अंगुत्तरनिकाय[17] में बुद्ध को श्रमण, ब्राह्मण, वेदज्ञ, भिषक, निर्मल, विमल, ज्ञानी विमुक्त आदि नामों से पुकारा गया है। यथा-

''यं समणेन पत्तब्बं ब्राह्मणेन वुसीमता।
यं वेदुगना पत्तब्बं, भिसक्केन अनुत्तरं।।''
''यं निम्मलेन पत्तब्बं, विमलेन सुचीमता।
यं ञाणिना च पत्तब्बं, विमुत्तेन अनुत्तरं।।''
''सोहं विजितसङ्गामो, मुत्तो मोचेमि बन्धना।
नागोम्हि परमदन्तो असेखो परिनिब्बुो''ति''' ।।[18]

अंगुत्तरनिकाय की टीका में बुद्धघोष ने बुद्ध को तथागत कहा है।[19]

---

[11] धम्मपद यह सुत्तपिटक के पांचवे भाग खुद्दकनिकाय का दुसरा महत्तवपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में बुद्ध द्वारा कहे धर्म व नीति से सम्बन्धित सभी उपदेशों का संग्रह है पालि साहित्य का इतिहास पृ 286

[12] सुखो बुद्धानं उप्पादो सुखा सद्धम्मदेशना।
सुखा संघस्स सामग्गी समग्गानं तपो सुखा।। धम्मपद- 14/194 डॉ भिक्षु धर्मरक्षित, मोतीलाल बनारसीदास 1983

[13] विसुद्धिमग्ग आचार्य बुद्धघोष का सबसे महत्तवपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के वैशिष्ट्य में पालि साहित्य के इतिहास में लिखा है कि इसे बुद्धधर्म का विश्वकोश समझना चाहिए। दूसरी इस ग्रन्थ की यह विशेषता है कि संयुत्तनिकाय के मात्र एक गाथा पर सम्पूर्ण ग्रन्थ की रचना हुयी है।

[14] विसुद्धिमग्ग- 16/21 पुनः **बुज्झिता सच्चानी ति बुद्धो, बोधेता पजाया ति बुद्धो।** खुद्दकनिकाय भाग-4

[15] महायानसुत्रालंकार यह आर्य मैत्रेय की रचना है।

[16] महायानसुत्रालंकार अधिकार 20-21 श्लोक- 60, 61 पृ 180

[17] अंगुत्तरनिकाय यह सुत्तपिटक का चौथा बडा भाग है। वैशिष्ट्य यह है कि यह संख्याबद्ध शैली में लिखा गया है। इस निकाय में ग्यारह निपात है ।पालि साहित्य का इतिहास पृ 231

[18] अंगुत्तरनिकाय अट्ठकनिपातो समणसुत्तं बौद्ध भारती वाराणसी 2009, पृ 525

दीघनिकाय अंगुत्तरनिकाय और विशुद्धिमग्ग में बुद्ध के निम्न विशेषण उपलब्ध है-

इति पि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो, सुगतो, लोकविदू, अनुत्तरो, पुरिस सदम्मसारथि, सत्था देव मनुस्सानं बुद्धो भगवा। [20]

अर्थात् भगवान् बुद्ध, अर्हत्, सम्यक् ज्ञान सम्पन्न, विद्या एवं आचरण से युक्त सद्गति को प्राप्त करने वाले, लोक-ज्ञाता, अनुपम, श्रेष्ठ मनुष्यों धर्म के नायक, देवता एवं मनुष्यों के शास्ता थे।

बुद्धों की संख्या-

पालि साहित्यों में बुद्धों की संख्या में काफी मतभेद दिखाई पड़ता है यथा पिटक साहित्य में छः बुद्ध मिलते है, तो अट्ठकथाओं में 24 या 29 बुद्ध प्राप्त होते हैं। उदाहरर्णाथ त्रिपिटक में दीघनिकाय के महापदानसूत्त में छः बुद्ध हुऐ,[21] व गौतम बुद्ध सातवे हैं। पुनः वहीं दीघनिकाय के तृतीय भाग पथिगवग्गसुत्त में चक्कावतीसिहंनादसूत्त है, इसमें भावि बुद्ध मैत्रेय की चर्चा है। अर्थात् आठ्वें बुद्ध का व्याकरण प्राप्त होता हैं।[22]

आगे संयुक्तनिकाय[23] तथा पाराजिक[24] में 7 बुद्धों की चर्चा उपलब्ध है। वहीं बुद्धवंस साहित्य में 25 बुद्धों की चर्चा होती है, इसी क्रम में तीन अन्य बुद्धों का भी उल्लेख मिलता है किन्तु व्याकरण प्राप्त नही है। बुद्धवंश को छोड़कर सुत्तपिटक व विनय पिटक में 6 पूर्व बुद्धों का वर्णन है, जबकि सुत्तपिटक के दीघनिकाय की अट्ठकथा [25] में 29 बुद्धों के नाम है, लेकिन संयुत्तनिकाय की अट्ठकथा [26] में 29 बुद्धों की चर्चा नही है, बल्कि पूर्व के अनुसार 6 बुद्धों की चर्चा है। इसी प्रकार विनय पिटक की अट्ठकथा[27] में भी 6 बुद्धों का वर्णन है। इस तरह कुछ अट्ठकथा साहित्यों में 29 बुद्धों का वर्णन है यथा- खुद्दकनिकाय के अन्तर्गत अपदान की अट्ठकथा[28] चरियापिटक की अट्ठकथा[29] जातक की अट्ठकथा[30] में 29 बुद्धों के नाम है। किन्तु बुद्धवंश की अट्ठकथा में 24 बुद्ध व

---

[19] अंगुत्तरनिकाय टीका सुमंगलविलासिनी भाग-1 वि. वि. वि इगतपुरी

[20] दीघनिकाय पथिकवग्गसुत्त सुनक्खत्तवत्थु, विपश्यना विशोधन विन्यास इगतपुरी

[21] "इतो सो, भिक्खवे, एकनवुतिकप्पे यं एकनवुतो कप्पो (स्या॰ कं॰ पी॰), विपस्सी भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो लोके उदपादि। दीघनिकाय महापदानसुत्त, मिथिला विद्यापीठ 2009, पृ 262

[22] मेत्तेय्यो भगवा लोके उपज्जिस्सति, दीघनिकाय, पथिकवग्गसुत्त, चक्कवत्तिसिंहनादसुत्त

[23] संयुत्तनिकाय द्वितीय भाग निदानवग्ग विपश्यना विशोधन विन्यास 1993 1-12 सावत्थियं विपस्सिस्स, .. जाति होति, किंपच्च या तण्हा होति,.. अविज्जाअपच्चया सङ्खारा"'ति। वेदनानिरोधा तण्हानिरोधो"'ति.८. कोणागमनस्स, भिक्खवे, भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स पे॰

[24] पाराजिक http://www.tipitaka.org/deva/

सुत्तपिटक दीघनिकाय अट्ठकथा भद्दकप्पेति पञ्चबुद्धप्पादपटिमण्डितत्ता सुन्दरकप्पे..पियदस्सी, अत्थदस्सी, धम्मदस्सीति .३.पञ्चबुद्धप्पादपटिमण्डितत्ता सुन्दरकप्पो सारकप्पोति भगवा इमं कप्पं थोमेन्तो एवमाह। विपश्यना विशोधन विन्यास इगतपुरी 1993,

संयुत्तनिकाय अट्ठकथा संयुक्तनिकायस्य अट्ठकथाया निदानवगस्य निदानसंयुत्ते विपश्यना विशोधन विन्यास इगतपुरी 1993,

[27] विनयपिटक अट्ठकथा "भगवतो च, सारिपुत्त, ककुसन्धस्स भगवतो च कोणागमनस्स भगवतो च कस्सपस्स ब्रह्मचरियंचिरट्ठितिकं अहोसी"ति अयं खो, सारिपुत्त, हेतु .कोणागमनस्स भगवतो च कस्सपस्स ब्रह्मचरियं चिरट्ठितिकं अहोसी"ति।http://www.tipitaka.org/deva/

[28] अपदान अट्ठकथा 'तण्हङ्करो मेधङ्करो, अथोपि सरणङ्करो।http://www.tipitaka.org/deva/

दीपङ्करो च सम्बुद्धो, कोण्डञ्ञो द्विपदुत्तम३..."एते अहेसुं जलित्वा अग्गिखन्धाव, निब्बुता ते ससावका"ति

http://www.tipitaka.org/deva/

चरियापिटक की अट्ठकथा"तण्हङ्करो मेधङ्करो,३. दीपङ्करो च सम्बुद्धो, कोण्डञ्ञो द्विपदुत्तमो३सतरंसीव उप्पन्ना, महातमविनोदना।३जलित्वा अग्गिक्खन्धाव, निब्बुता ते ससावका"ति॥

http://www-tipitaka-org/deva/

वर्तमान गौतम बुद्ध की चर्चा है व तीन अन्य बुद्धों के व्याकरण नही हुए है, ऐसा प्रसंग आया है, फिर भी इनकी चर्चा जिनकालमालीनि नामक वंश साहित्य में की गयी है। बौद्ध जगत में 29 बुद्धों की पूजा सर्वत्र की जाती है। तथा सभी अट्ठकथाओं व टीकाओं में इनकी संख्या पायी गयी है।

स्थविरवादी परम्परानुसार बुद्ध केवल जम्बूद्वीप में ही उत्पन्न होते हैं एक समय केवल एक बुद्ध का प्रादुर्भाव होता है। जब एक बुद्ध के शासन का पूर्णतः अन्तर्धान हो जाता है तो अन्य बुद्ध का आगमन होता है। बुद्ध केवल सन्मार्ग का प्रज्ञापन करते हैं बुद्ध की स्पष्ट उक्ति है कि 'वे तो केवल मार्ग दिखलाने वाले हैं, चलना तो मनुष्य को ही पड़ेगा'। **तुम्हेहि किच्च आतप्पं अक्खातारो तथागतो।**

कल्पभेद[31] तथा बुद्ध-

बौद्ध परम्परा में कल्प की दृष्टि से काल की गणना की गयी हैं, दो प्रकार के कल्प होते हैं।

1. शून्य कल्प 2. अशून्य कल्प। शून्य कल्प में बुद्ध उत्पन्न नहीं होते है। उनकी उत्पत्ति केवल अशून्य कल्प में होती है। अशून्य कल्प के पांच भेद होते हैं। यथा सारमण्डकल्प, मण्डकल्प, वरकल्प, सारमण्डकल्प, भद्रकल्प प्रत्येक कल्प में बुद्धों की उत्पत्ति होती है। जिस कल्प में एक ही बुद्ध उत्पन्न होते हैं उसे सारकल्प कहते हैं। जिस कल्प में दो बुद्ध उत्पन्न हो वह मण्डकल्प हैं। तीन बुद्ध वाले कल्प को वरकल्प कहते हैं, चार बुद्ध वाले कल्प को सारमण्डकल्प कहते हैं। और जिस कल्प में पांच बुद्ध उत्पन्न हो वह भद्रकल्प[32] हैं।

इनका स्वरूप स्थिर नहीं रहता है ये आते जाते रहते हैं।

निदानकथा की भूमिका में कल्पगत बुद्ध की उत्पत्ति का विवरण प्राप्त होता हैं-

कल्पनाम	बुद्ध नाम
1. सारकल्प-	कौडिन्य, पद्मोतर, सिदार्थ, विपश्यी।
2. मण्डकल्प-	सुमेध, सुजात, तिष्य, पुष्य, शिखि, विश्वभू।
3. वरकल्प-	अनोमदर्शी, पद्म, नारद, प्रियदर्शी, अर्थदर्शी, धर्मदर्शी।
4. सारमण्डकल्प-	दीपंकर, मंगल, सुमन, रेवत, शोभित।
5. भद्रकल्प-	ककुसन्ध, कोणागमन, काश्यप तथा गौतम बुद्ध।

सारमण्डकल्प में दीपंकर आदि बुद्धों के साथ तण्हंकर, मेधंकर व सरणंकर भी हुऐ थे। तथा भद्रकल्प में ककुसन्ध आदि बुद्धों के साथ मैत्रेय बुद्ध भी उत्पन्न होंगे।[33]

निदानकथा की भूमिका से प्राप्त होता है कि बुद्ध का प्रार्दुभाव एक अद्भुत घटना के रूप में समझा जाता है। बुद्ध जैसे शब्द की ध्वनि दुर्लभ है। बुद्धत्व की प्राप्ति असंख्य जन्मों की अनवरत साधना की पारमिताओं की पूर्तिकर दान शील आदि से ओतप्रोत हो वह बुद्ध रूप में आते हैं। तथा बोधिलाभ कर धर्मचक्र प्रवर्तन करते है जैसे कि गौतम बुद्ध की चर्या तथा उनसे पूर्व बुद्धों की चर्या से प्रकट होता हैं। यह अनन्त गुणों से युक्त होते हैं। यथा दस बल, चार वैशारद्य...

बुद्ध के महापरिनिर्वाणोपरान्त उनका शासन कुछ काल तक विद्यमान रहता है, धीरे-धीरे विनय का लोप होने लगता है फिर पुनः एक नये बुद्ध का प्रादुर्भाव होता है और बुद्ध शासन का आरम्भ हो जाता है।

---

[30] जातक की अट्ठकथा 'यस्मिं पन कप्पे दीपङ्करो दसबलो उदपादि, तस्मिं अञ्ञेपि तयो बुद्धा अहेसुं। तेसं सन्तिका बोधिसत्तस्स ब्याकरणं नत्थि, तस्मा ते इध न दस्सिता। अट्ठकथायं पन तम्हा कप्पा पट्ठाय सब्बेपि बुद्धे दस्सेतुं इदं वुत्तं दृ

"तण्हङ्करो मेधङ्करो, अथोपि सरणङ्करो।तत्थ अम्हाकं बोधिसत्तो दीपङ्करादीनं चतुवीसतिया ३...लद्धब्याकरणो पन बोधिसत्तो येन http://www.tipitaka.org/deva/

[31] तिवारी, डॉ महेश, निदानकथा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी 1970 पृ 74,

[32] तिवारी, डॉ महेश, निदानकथा, पृ 74

[33] इमम्हि भद्दकप्पे, तयो आसुं विनायका।
ककुसन्धे कोणागमनो कससपो चापि नायको।।
अहमंतरहि सम्बद्धो, मेत्तेय्यो चापि हेस्सति।
एमेपिमे पञ्च बद्धा धीरा लोकानुकम्पका।।19।। बुद्धवंश, सिन्हा प्रकाशन गया 1995

बुद्धो का वर्गीकरण- बौद्ध परम्परा में दो प्रकार के बुद्ध वर्णित हैं।– सम्यक् सम्बुद्ध तथा प्रत्येक बुद्ध।[34] सम्यक् सम्बुद्ध से तात्पर्य है कि उन्होंने समस्त धर्मों को सम्यक् रूप से जान लिया हो, "सम्मा सामञ्च सब्बधम्मानं बुद्धता पन सम्मासम्बुद्धो"[35]। चुल्लनिद्देस में प्रत्येक बुद्ध के लिए वर्णित है कि एवं से पच्चेक सम्बुद्धो एको अनुत्तरं पच्चेकसम्बोधि अभिसम्बुद्धो ति एको , अर्थात् ऐसे बुद्ध अनाचर्यक भाव से प्रत्येक सम्बोधि को प्राप्त करते है। प्रत्येक बुद्ध जनसमुह के तारण के लिए धर्मोपदेश नहीं करते हैं, ये सदा एकान्त में विहार करते हैं। चुल्लनिद्देस[36] में प्रत्येक बुद्ध के एकान्त विहारी होने का नव कारण वर्णित है ।- यथा वे प्रव्रज्या , अद्वितीय विहार, तृष्णा प्रहाण, एकान्ततः वीतरागता, एकान्ततः वीतद्वेषता, एकान्ततः वीतमोहता, एकान्ततः क्लेशरहितता, एकमात्रमार्गगमनता, अनुत्तर प्रत्येक सम्बोधिगमनता की दृष्टियों से अकेले होने के कारण एकान्त विहारी हैं। बुद्धो को वर्गीकरण अन्य प्रकार से भी देखने को मिलता है। यथा- अतीतबुद्ध, वर्तमानबुद्ध, अनागत या भावी बुद्ध। बुद्धो की संख्या कही 6 , 24, व 29 प्राप्त हुयीं, इन संख्याओं को आसानी से समझने के लिये इनका वर्गीकरण किया गया है।- यथा अतीतबुद्ध, वर्तमानबुद्ध व अनागतबुद्ध । पालि त्रिपिटक, अनुपिटक, अट्ठकथा साहित्य में प्रचुर मात्रा में इन तीन प्रकार के बुद्धों की चर्चा के अंश प्राप्त होते हैं उनका विवरण निम्न प्रकार से है। यथा-पालि त्रिपिटक के दीघनिकाय महापदानसुत्त में 6 बुद्धों की चर्चा है।[37] जिन्हे अतीत बुद्ध कहा जाता है, जिनके नाम हैं ।विपश्यी, शिखी, वैश्वभू, ककुच्छन्द, कोणागमन व कश्यप । गौतम बुद्ध जो वर्तमान काल में हमारे समक्ष थे उन्हें वर्तमानकालिक बुद्ध माना गया है, उनका पूर्ण विवरण सभी ग्रन्थों में मिलता है। वहीं आगे दीघनिकाय के तृतीय भाग पथिकवग्गसुत्त[38] में अनागत बुद्ध की भविष्यवाणी प्राप्त होती है। इस प्रकार विनयपिटक, संयुक्तनिकाय, जातक, थेरीगाथा में छः अतीतकालिक बुद्धों की चर्चा है[39] किन्तु इनकी अट्ठकथाओं व टीकाओं में 29 अतीतकालिक बुद्धों के नाम मिलते हैं तथा कुछ अट्ठकथाओं में उनके जीवन से सम्बन्धित विवरण भी मिलते है। तथा साथ ही साथ गौतम बुद्ध का विशद जीवन परिचय देखने को मिलता है इन सात बुद्धों को मानुषी बुद्ध की संज्ञा दी गई है, क्योंकि यही समय-समय पर धर्म की प्रतिष्ठा के लिऐ आते हैं।[40] वहीं खुद्दकनिकाय के अन्तर्गत बुद्धवंस[41] साहित्य में 24 अतीत बुद्धों के जन्म काल का विवरण है तथा गौतम बुद्ध की जीवन गाथा वर्णित है तथा अनागत बुद्ध का व्याकरण भी नाममात्र प्राप्त होता है। आगे दसबोधिसत्तवोत्पतितकथा[42] नामक ग्रन्थ में अनागत भविष्य में होने वाले 10 बुद्धों की चर्चा मिलती है।

बुद्ध के मार्ग तक पहुँचने के लिए थेरवादियो में चार प्रकार के मार्ग गिनाये गये हैं।– यथा स्रोतापत्ति, सकृदागामी, अनागामी, अर्हत्।[43] इन मार्गों को पार करने के उपरान्त ही पुद्गल अर्हत् की प्राप्ति करता है, तथा प्रबुद्ध ज्ञान प्राप्त होने के कारण ही वह बुद्ध कहलाता है।

---

[34] इधेकच्चो पुग्गलो पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु सामं सच्चानि अभिसम्बुज्झति,...अयं वुच्चति पुग्गलो पच्चेकबुद्धो , पु. पु.पृ 23

[35] तिवारी, डॉ महेश, निदानकथा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी 1970 पृ 69

[36] सो पच्चेकसम्बुद्धो पब्बज्जासङ्खातेन एको, अदुतियट्ठेन एको, तण्हाय पहानट्ठेन एको, एकान्तवीतरागो ति एको, एकन्तवीतदोसो ति एको ,एकन्तवीतमोहो ति एको, एकन्तनिक्किलेसो ति एको, एकायनमग्गं गतो ति एको, एको अनुत्तरं पच्चेकसम्बोधिं अभिसम्बुद्धो ति एको। चूल्लनिद्देसपालि पारायनत्थुतिगाथानिद्देसो पृ 244

[37] तिवारी, डॉ महेश, निदानकथा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी 1970 पृ 70

[38] मनुस्सेसु 'मेत्तेय्यो नाम भगवा उपज्जिस्सति' अरहा सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू... सुत्तपिटक दीघनिकाय, विपश्यना विशोधन विन्यास इगतपुरी 1993, पृ 60 ,इमस्मिं भद्दकप्पे असंजाते वस्सकोटियो, मेत्तेय्यो नाम नामेन, सम्बुद्धो द्विपदुत्तमो।। JPTS 1886 pp 33-53

[39] संयुक्तनिकाय, भाग 2, 6-12, विपश्यना विशोधन विन्यास इगतपुरी 1993

[40] बौद्ध धर्म दर्शन, आचार्य नरेन्द्रदेव, पृ. 121, मोतीलाल बनारसीदास संस्करण, 2006

[41] बुद्धवंश, सिन्हा प्रकाशन गया 1995

[42] मेत्तेय्यो उत्तमो रामो, पसेनदि कोसलोभिभू।
दीघसोणि च संकच्चो सुभो तोदेय्यब्रह्मणो।
नालागिरिपलालेय्यो, बोधिसत्ता इमे दस।
अनुक्कमेन सम्बोधिं पापुणिस्सन्ति नागते।। दसबोधिसत्तवोत्पतितकथा स, डॉ सुरेन्द्र कुमार, स सं वि,वि ,वाराणसी 2005

[43] विशुद्धिमग्ग आणदस्सनविसुद्धिनिद्देसो बौद्ध भारती वाराणसी 2006 पृ 377

इस प्रकार इस मनुष्य लोक में बुद्ध का उत्पन्न होना सुखकारी माना गया है। विनय के क्षय हो जाने से एक नये बुद्ध का आगमन इस बात को दर्शाता है कि हमें विनय का पालन पूर्ण ईमानदारी और निष्ठा के साथ करना चाहिए, यदि विनय का पालन नहीं किया तो मनुष्य को निर्वाण प्राप्त नहीं होगा तथा निरन्तर जन्म और मृत्यु का क्रम चलता रहेगा।

इति शम्

कूटशब्दा- अर्हत- अरीनं हतत्ता पि अरहं।[44]

सम्मासम्बुद्ध- सम्मा सामं च सब्बधम्मानं पुद्धता पन सम्मासम्बुद्धो[45]

विज्जाचरणसम्पन्नो- विज्जाहि पन चरणेन च सम्पन्नता विज्जाचरणसम्पन्नो[46]

सुगत- सम्मा गतत्ता पि सुगतो[47]

[44] विशुद्धिमग्ग भाग -2, बौद्ध भारती वाराणसी 2006 पृ 5

[45] विशुद्धिमग्ग भाग -2, बौद्ध भारती वाराणसी 2006 पृ 10

[46] विशुद्धिमग्ग भाग -2, बौद्ध भारती वाराणसी 2006 पृ 11

[47] विशुद्धिमग्ग भाग -2, बौद्ध भारती वाराणसी 2006 पृ 113